श्रीमद्भागवतम्

विषय-सूची

आमुख
प्रस्तावना
दशम स्कंध का सारांश
अध्याय एक
भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार-परिचय
अध्याय का सारांश
भगवद्धाम
जन्म-मृत्यु रोग की औषधि
भगवान् कृष्ण के चरणकमलों में शरण
ईश्वर कभी निराकार नहीं होता
सरकारी नेताओं के लिए कृष्णकथा अनिवार्य
कृष्ण कोई सामान्य ऐतिहासिक पुरुष नहीं
भगवान् की शक्तियाँ किस तरह कार्य करती हैं
प्राचीन वैदिक विवाह प्रथाएँ
जीव सदैव शरीर बदलता है
अगला शरीर मन की स्थिति के अनुसार उत्पन्न होता है
जीव अपनी पहचान अपने शरीर से क्यों करता है
वैदिक संस्कृति का लक्ष्य मृत्यु से बचना है
वसुदेव द्वारा नवजात पुत्रों को कंस को देने का वचन
भगवान् की लीलाओं में भाग लेने के लिए भक्तों का आह्वान
कंस द्वारा वसुदेव के पुत्रों का वध
अध्याय दो
देवताओं द्वारा गर्भस्थ कृष्ण की स्तुति
अध्याय का सारांश
भगवान् क्यों अवतरित होते हैं
''समस्त जीव मुझमें हैं किन्तु मैं उनमें नहीं हूँ''

आत्म–तत्त्व
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी
वैदिक ज्ञान का विश्वव्यापी वितरण
देहात्म बुद्धि का भोग
स्तुति करने हेतु देवताओं का अलक्षित होकर देवकी के कक्ष में प्रवेश
भौतिक विज्ञानियों के त्रुटिपूर्ण निष्कर्ष
जन्म–मृत्यु के सागर को लाँघना
''कई पंथ एक ही फल''—इस दर्शन का बहिष्कार
हरे कृष्ण मंत्र का महत्त्व
भौतिक मन तथा इन्द्रियाँ कृष्ण को नहीं समझ पातीं
अवतार लेने के लिए भगवान् बाध्य नहीं
देवताओं का स्वर्गलोक को लौट जाना
अध्याय तीन
कृष्ण जन्म
अध्याय का सारांश
शुभ शकुनों से ब्रह्माण्ड पूरित
नवजात शिशु के रूप में भगवान् का वर्णन
वसुदेव द्वारा अपने पुत्र कृष्ण की स्तुति
प्रयोगशाला में जीवन क्यों उत्पन्न नहीं किया जा सकता
बेचारी जनता की रक्षा हेतु कृष्ण का अवतरण
देवकी द्वारा अपने दिव्य शिशु की स्तुति
परमेश्वर को काल भय नहीं
सामान्य बालक का रूप धारण करने के लिए कृष्ण से प्रार्थना
भगवान् कृष्ण के माता–पिता के पूर्व जन्म
ईश–प्रेम सबसे बड़ी उपलब्धि
कृष्ण को सामान्य मनुष्य मानने की साँठ गाँठ
वसुदेव द्वारा कृष्ण को वृन्दावन ले जाया जाना
केवल भक्ति:भगवान् का घनिष्ठ प्रेम
अध्याय चार
राजा कंस के अत्याचार
अध्याय का सारांश
भौतिक जगत के छद्म संरक्षक
अपने पुत्र को बचाने के लिए देवकी की युक्ति
दुर्गा–पूजकों को बारम्बार शरीर धारण करना पड़ता है
आत्मा शारीरिक परिवर्तनों से सदैव पृथक् है
कंस को अपने जघन्य कार्यों पर पछतावा

भौतिकतावादी केवल बाहर से दक्ष
सनातन धार्मिक नियमों का वर्णन
कंस के असुरों द्वारा सन्तों का उत्पीड़न
अध्याय पाँच
नन्द महाराज तथा वसुदेव की भेंट
अध्याय का सारांश
श्रीकृष्ण का वैदिक जन्मोत्सव
मानव सभ्यता के सुअवसर का विनाश
वैदिक समाज में अन्नाभाव नहीं
कर देने के लिये नन्द का मथुरा जाना
गो-वध के भयंकर परिणाम
अध्याय छह
पूतना वध
अध्याय का सारांश
परम नियन्ता की शरण में जाना
पूतना द्वारा बाल-कृष्ण को विष देने का प्रयास
भगवान् के स्वरूप सर्वशक्तिमान होते हैं
वैदिक मंत्र: संकट से रक्षा
पूतना भौतिक कल्मष से मुक्त
श्रीकृष्ण के साथ दिव्य सम्बन्ध
अध्याय सात
तृणावर्त असुर का वध
अध्याय का सारांश
समस्त कष्टों का मूल कारण
वैदिक समाज में गर्भधारण कभी बोझ नहीं
कृष्ण की शकट-भंजन लीला
मानव समाज को आदर्श श्रेणी के लोगों की आवश्यकता
तृणावर्त:चक्रवात के रूप में असुर
योगेश्वर:योगशक्ति के स्रोत
भगवान् द्वारा रक्षा
अध्याय आठ
भगवान् कृष्ण द्वारा अपने मुख के भीतर
विराट रूप का प्रदर्शन
अध्याय का सारांश
आत्मा के देहान्तरण का विज्ञान
कृष्ण का नाम-करण संस्कार गुप्त रूप से सम्पन्न

ईश्वर एक है किन्तु उसके नाम तथा रूप अनेक हैं
भगवान् की बालक्रीड़ाएँ
कृष्ण के संगियों द्वारा शिकायत कि उन्होंने मिट्टी खाई है
कृष्ण के मुख के भीतर विराट रूप का दर्शन
हर वस्तु के परम स्वामी
नन्द महाराज तथा माता यशोदा के विगत जीवन
भौतिक संसार के कष्टमय जीवन से दूर रहना
अध्याय नौ
माता यशोदा द्वारा कृष्ण को बाँधा जाना
अध्याय का सारांश
महान् भक्तों द्वारा कृष्ण की माता के वर्णन का स्मरण
माता यशोदा द्वारा भगवान् का पीछा किया जाना
समस्त कारणों के कारण सर्वव्यापी भगवान्
शुद्ध भक्ति द्वारा भगवान् वशीभूत
अध्याय दस
यमलार्जुन वृक्षों का उद्धार
अध्याय का सारांश
नलकूवर तथा मणिग्रीव का निन्दनीय आचरण
पाश्चात्य सभ्यता: शराब, स्त्री तथा जुआ खेलना
पुनर्मूषिको भव
सन्त पुरुष के लक्षण
बाल-कृष्ण द्वारा यमलार्जुन वृक्षों का उत्पाटन
सृष्टि के पूर्व कृष्ण विद्यमान
ईशभावनामृत निर्मित नहीं किया जा सकता
अध्याय ग्यारह
कृष्ण की बाल-लीलाएँ
अध्याय का सारांश
कृष्ण की लीलाएँ नन्द तथा गोपों को मोहित करने वाली
भगवान् को दोपहर का भोजन करने में देरी
कृष्णभावनामृत का भूत, वर्तमान तथा भविष्य
वैदिक शिक्षा प्रणाली
बकासुर द्वारा भगवान् कृष्ण का निगला जाना
श्रीमद्भागवत: दिव्य सुख तथा समस्त कष्टों से मुक्ति
अध्याय बारह
अघासुर का वध
अध्याय का सारांश

हजारों ग्वालबालों का कृष्ण के साथ जंगल जाना
वैकुण्ठ में आध्यात्मिक भोग
श्रीमद्भागवत जन्म–मृत्यु के चक्र को रोकता है
अघासुर द्वारा अजगर का रूप धारण करना
कृष्ण द्वारा अघासुर का मारा जाना
आध्यात्मिक व्यष्टित्व तथा मुक्ति का प्रदर्शन
केवल चिन्तन से ही कृष्ण की प्राप्ति
अध्याय तेरह
ब्रह्मा द्वारा बालकों और बछड़ों की चोरी
अध्याय का सारांश
भगवान् के कार्यकलाप अत्यन्त गुह्य
कृष्ण अपने भक्तों को सदा दिखने वाले
भगवद्भक्त निडर होता है
ब्रह्मा द्वारा बछड़ों तथा बालकों की चोरी
ब्रह्मा को चकित करने के लिए कृष्ण का बछड़ों तथा बालकों में विस्तार
भगवान् सर्वेसर्वा
कृष्ण की योगमाया से बलदेव चकित
ब्रह्मा अपनी ही योगशक्ति से विमोहित
विष्णु की चितवन से भक्त की इच्छाएँ उत्पन्न
सारे जीव कृष्ण के दास
भगवान् केवल भक्ति से जाने जाते हैं
दिव्य आनन्द से ब्रह्मा स्तब्ध
भगवान् अद्वितीय हैं
परिशिष्ट
लेखक परिचय